Paan Gutka (Hindi)

पान गुटका

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ

مکتبۃ المدینہ
(دعوت اسلامی)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (المُستطرَف ج۱ص۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

पान गुटका

येह रिसाला (**पान गुटका**)

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 93740 31409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए मगर ब निय्यते सवाब येह रिसाला (28 सफ़ह़ात) पूरा पढ़ कर अपनी दुन्या व आख़िरत का भला कीजिये।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

नबियों के सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमिय्यान, सरदारे दो जहान, मह़बूबे रह़मान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नमाज़ के बा'द ह़म्दो सना व दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले से फ़रमाया : "दुआ मांग क़बूल की जाएगी, सुवाल कर, दिया जाएगा।" (نَسائی ص ۲۲۰ حدیث ۱۲۸۱)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मुसल्मान की भलाई चाहना कारे सवाब

ह़ज़रते सय्यिदुना जरीर बिन **अ़ब्दुल्लाह** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं : मैं ने हुज़ूर ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से नमाज़ पढ़ने, ज़कात देने और हर मुसल्मान की ख़ैर ख़्वाही करने पर बैअ़त की। आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : (بُخاری ج ۱ ص ۳۵ حدیث ۵۷)

''हर फ़र्दे इस्लाम की ख़ैर ख़्वाही (या'नी भलाई चाहना) हर मुसल्मान पर **फ़र्ज़** है ।'' (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 14, स. 415)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मसूढ़ों के केन्सर के मरीज़ की ह़िकायत

अन्दाज़न चालीस सालह आदमी ने एक बार सगे मदीना عُفِيَ عَنْهُ को बताया : मेरे **मसूढ़ों में केन्सर** हो गया है, ऑपरेशन भी करवा चुका हूं मगर सिह़्ह़त नहीं मिली, दर अस्ल मैं रोज़ाना 20 या 25 पान खाता और साथ ही साथ सिगरेट की एकआध डिबिया भी पी जाता था । मैं ने पूछा : अब पान सिगरेट का इस्ति'माल फ़रमाते हैं या नहीं ? तो वोह दोनों हाथ से कान पकड़ने लगे कि इन चीज़ों ही ने तो मुझे बरबाद किया और मौत के दहाने पर ला खड़ा किया, अब इन को कैसे इस्ति'माल कर सकता हूं !

आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने परहेज़ी इर्शाद फ़रमाई

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इसी त़रह़ के और भी मरीज़ देखे और सुने । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब, त़बीबों के त़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बीमारों से हमदर्दी फ़रमाते थे और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुख़्तलिफ़ मवाक़े'अ पर मुआ-लजात और परहेज़ी की हिदायात भी इर्शाद फ़रमाई हैं, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे मुन्ज़िर رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं : (एक दिन) **नबिय्ये** करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم मेरे यहां

तशरीफ़ लाए, ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تعالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيم भी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हमराह थे। हमारे यहां खजूरों के ख़ोशे लटके हुए थे। रसूले करीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم उन्हें तनावुल फ़रमाने लगे, ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تعالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيم भी साथ खाने लगे। प्यारे प्यारे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऐ अ़ली ! ठहरो, ठहरो ! (या'नी तुम इन खजूरों को खाने से परहेज़ करो) क्यूं कि तुम में अभी नक़ाहत है" (या'नी तुम अभी बीमारी से उठे हो और तुम पर कमज़ोरी का असर ग़ालिब है इस लिये तुम्हारे लिये परहेज़ ज़रूरी है)। ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे मुन्ज़िर رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं : फिर मैं ने उन के लिये **चुक़न्दर और जव** पकाए तो **नबिय्ये** करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم ने फ़रमाया : "ऐ अ़ली ! तुम इस में से खाओ क्यूं कि येह तुम्हारे लिये नफ़्अ़ बख़्श और मुवाफ़िक़ है।" (ترمذی ج٤ ص٣ حدیث ٢٠٤٣)

डॉक्टर के मन्अ़ करने का इन्तिज़ार मत कीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ख़ैर ख़्वाही करते हुए आप को **पान गुटके के नुक़्सानात** से बचाने के मुक़द्दस जज़्बात के तह़्त इन के बा'ज़ ज़रर रसां (या'नी नुक़्सान देह) पहलूओं की निशान देही करने की कोशिश करता हूं। **ज़हे नसीब !** मरज़ की आमद और डॉक्टर के इन्तिबाह (Warning) से क़ब्ल ही मुझ गुनहगार के हमदर्दाना अल्फ़ाज़ पढ़ कर इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें ह़ुसूले नफ़्सानी ख़्वाहिशात, ग़ैर मुफ़ीद लज़्ज़ात और मुज़िर्रात (या'नी नुक़्सान पहुंचाने वाली चीज़ों) से परहेज़ इख़्तियार फ़रमा लें।

तेरी वह़शतों से ऐ दिल ! मुझे क्यूं न आ़र आए
तू उन्हीं से दूर भागे जिन्हें तुझ पे प्यार आए

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ ! तेरे प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस फ़रमाने आ़लीशान : اَلدِّيْنُ النَّصِيْحَةُ या'नी दीन ख़ैर ख़्वाही का नाम है । (مُسلِم ص ٤٧ حديث ٥٥) का वासित़ा मुझे उम्मते मह़बूब की ख़ैर ख़्वाही का दर्द नसीब फ़रमा, ख़ैर ख़्वाही में अग़लात़ से मह़फ़ूज़ कर और शरीअ़त के मुत़ाबिक़ दिये जाने वाले मेरे ख़ैर ख़्वाहाना मश्वरे हाथों हाथ लेने और इन पर अ़मल करने की मुसल्मानों को सआ़दत इ़नायत फ़रमा और मुझे भी अ़-मले ख़ैर की तौफ़ीक़ बख़्श ।

तू तह़रीर में दे दे तासीर या रब ! क़लम में असर हो अ़त़ा या इलाही

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

पान क्या है ?

पान एक मख़्सूस बेल का पत्ता है । जिस्मे इन्सानी पर **पान** की तासीर ''गर्म ख़ुश्क'' है, इस में विटामिन बी कोम्पलेक्स (Vitamin B complex) होता है ।

"या ग़ौसे आ'ज़म नज़रे करम" के पन्दरह ह़ुरूफ़ की निस्बत से पान के 15 फ़वाइद

《1》 **पान** का पत्ता खाया जाए तो बदन में ख़ून बनाने में मदद करता है 《2》 दिल को फ़रह़त 《3》 जिगर 《4》 मे'दा और 《5》 दिमाग़ को क़ुव्वत बख़्शता 《6》 मुंह की ख़ुश्की दूर करता और 《7》 गला साफ़

करता है ﴾8﴿ **पान** का कोरा पत्ता चबाने से दांतों का दर्द दूर और ﴾9﴿ मुंह की बदबू काफ़ूर (दूर) होती है ﴾10﴿ येह खांसी ﴾11﴿ ज़ुकाम और ﴾12﴿ थकन दूर करता है ﴾13﴿ खाना हज़्म करने में मददगार है अलबत्ता नहार मुंह खाने से भूक कम करता है ﴾14﴿ **पान** में क्लोरोफ़िल (Chlorophyll) होता है और इसी वजह से इस का रंग सब्ज़ होता है और येह सिर्फ़ पत्तों ही में पाया जाता है। क्लोरोफ़िल बदने इन्सानी के लिये क़ुव्वत बख़्श है ﴾15﴿ पुराने ज़माने में मुंह का ज़ाएक़ा ठीक करने के लिये **पान** इस्ति'माल किया जाता था, अब भी **पान** का सिर्फ़ कोरा पत्ता खा कर इस के फ़वाइद ह़ासिल किये जा सकते हैं। मुरव्वजा **पान** के अहम अज्ज़ा **कत्था, चूना** और **छालिया** हैं। लिहाज़ा इन के बारे में भी मुख़्तसरन मा'लूमात ह़ाज़िर हैं :

कत्था क्या है ?

कत्था एक मख़्सूस दरख़्त की लकड़ियों का उ़सारा (या'नी निचोड़) है। अस्ली कत्थे की इन्सानी जिस्म पर तासीर ''सर्द ख़ुश्क'' है।

कत्थे के 8 फ़वाइद

﴾1﴿ **कत्था** ख़ून साफ़ करता है ﴾2﴿ दस्त बन्द करता और क़ब्ज़ करता है ﴾3﴿ ख़ून और ﴾4﴿ जिगर के ग़ैर ज़रूरी माद्दे के इख़्राज (या'नी निकालने) में मदद करता है ﴾5﴿ बल्ग़म और ﴾6﴿ ख़ून के फ़साद को दूर करता ﴾7﴿ पेशाब की जलन को मिटाता है ﴾8﴿ इस के ग़रारे मुंह के छालों के लिये मुफ़ीद हैं।

सूखी खांसी का इलाज

अस्ली **कथ्था, हल्दी** और **मिसरी** तीनों हम-वज़्न पीस कर रख लीजिये और सुब्ह़ व शाम एक एक ग्राम इस्ति'माल कीजिये । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **ख़ुश्क खांसी** के लिये मुफ़ीद पाएंगे ।

मुफ़ीद मन्जन

अस्ली **कथ्था** और **छालिया** हम-वज़्न पीस कर दांतों पर मलने से हिलते दांत मज़्बूत़ होते और मसूढ़ों की सूजन भी **बि इज़्निल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ठीक हो जाती है ।

नक़्ली कथ्थे की तबाह कारियां

मेरी मा'लूमात के मुत़ाबिक़ पाकिस्तान में कथ्थे की पैदावार नहीं होती, लिहाज़ा दौलत के ह़रीस अफ़्राद जिन्हें किसी की दुन्या और अपनी आख़िरत **बरबाद** होने की कोई फ़िक्र नहीं होती वोह मिट्टी में चमड़ा रंगने का **रंग** मिला कर उसी मिट्टी को **कथ्था** कह कर बेचते हैं ! और यूं बेचारे **पाकिस्तानी पान ख़ोर** गन्दी मिट्टी खा कर त़रह़ त़रह़ के अमराज़ का शिकार और सख़्त बीमार हो कर तबाही के ग़ार में जा पड़ते हैं । खाना ही हो तो अस्ली कथ्था सिर्फ़ मुनासिब मिक़्दार में खाएं, जान बूझ कर **नक़्ली कथ्था** हरगिज़ इस्ति'माल न फ़रमाएं । नक़्ली कथ्थे के ताजिर और नक़्ली कथ्थे वाला **पान गुटका** धोके से बेचने वाले इस फ़े'ल से सच्ची तौबा करें, नीज़ जान बूझ कर मिट्टी खाने वाले भी बाज़ आएं । मिट्टी के बारे में शर-ई मस्अला येह है कि इसे **ह़द्दे ज़रर तक** (या'नी नुक़्सान देह मिक़्दार में) **खाना ह़राम है** । चुनान्चे **ख़ातिमुल**

मुहक़्क़िक़ीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा इब्ने आ़बिदीन शामी قُدِّسَ سِرُّہُ السَّامِی फ़रमाते हैं : اَلتُّرَابُ طَاهِرٌ وَّ لَا يَحِلُّ اَكْلُهٗ या'नी मिट्टी पाक है और इस का (नुक़्सान देह ह़द तक) खाना, ह़लाल नहीं। (رَدُّالْمُحتار ج ١ ص ٤٠٣) **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि **मिट्टी ह़द्दे ज़रर तक** (या'नी नुक़्सान देह मिक़्दार में) **खाना ह़राम है।**

(ज़मीमए बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल, स. 418)

मिट्टी खाना गोया ख़ुदकुशी है

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के **मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल ड़यूब, फ़ातिहुल क़ुलूब** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जो शख़्स मिट्टी खाता है गोया ख़ुदकुशी करता है।

(اَلسّنَنُ الکُبری لِلْبَیْہَقِی ج ١٠ ص ٢٠ حدیث ١٩٧١٩)

चूना क्या है ?

चूना ज़मीन की जिन्स (या'नी क़िस्म) से है या'नी अज़ क़िस्मे मिट्टी और पथ्थर है, चूने का कीमियाई नाम **केल्शियम** (Calcium) है, इन्सानी जिस्म पर इस की तासीर "गर्म ख़ुश्क" है येह क़ुदरती त़ौर पर इन्सानी हड्डियों में मौजूद होता है।

चूने के फ़वाइद

चूना हड्डियां और दांत बनाता है, ख़ून की नालियों की दीवारों को मज़्बूत़ करता है, बच्चों को चूने की ज़रूरत ज़ियादा रहती है, जो बच्चे

देर से चलना सीखते हैं, जिन के दांत देर से निकलते हैं उन का सबब चूने (या'नी केल्शियम) की कमी होती है। (हर त़रह़ का इ़लाज त़बीब के मश्वरे ही से करना चाहिये)

चूना खाने का शर-ई हुक्म

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिये ने'मत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिद्अ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइसे ख़ैरो ब-र-कत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : **पान** खाना जाइज़ है और उतना **चूना** (खाना) भी (जाइज़ जो) कि ज़रर (या'नी नुक़्सान) न करे ।

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 24, स. 558)

चूने के नुक़्सानात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा नुक़्सान देह ह़द तक **चूना** खाना जाइज़ नहीं क्यूं कि ज़ियादा चूना खाने से मुंह में छाले पड़ते हैं और इस से पेशाब का अ़मल भी **मु-तअस्सिर** होता है । **पान सुपारी की कसरत के सबब जिन के मुंह की खाल तक्लीफ़ देह ह़द तक सुकड़ती और मुंह में छाले पड़ते हैं उन के लिये पान छालिया और चूने वग़ैरा का इस्ति'माल शरअ़न मम्नूअ़ है ।**

छालिया

छालिया (सुपारी) एक दरख़्त का फल है, बदने इन्सानी पर इस की तासीर ''सर्द ख़ुश्क'' है, **छालिया** क़ब्ज़ करती है। वरम (सूजन) को दूर करती और औरतों के सैलानुर्रिह्म (लीकोरिया) के लिये मुफ़ीद है। **छालिया** का ज़ियादा इस्ति'माल नुक़्सान देह है।

छालिया का मन्जन

छालिया को जला कर कोएला बना लीजिये और उस से तीन गुना ''चोंक'' (Chalk) उस में मिला कर पीस कर बोतल में रख लीजिये और रोज़ाना बतौरे **मन्जन** इस्ति'माल कीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दांत साफ़, चमकदार और मसूढ़े मज़्बूत होंगे।

ज़बान का केन्सर

ज़बान पर क़ुदरती तौर पर मख़्सूस ज़र्रात होते हैं जिन में क़ुव्वते ज़ाएक़ा होती है, इन्हीं ज़र्रात के ज़रीए **ज़बान** की नोक से मिठास का और **ज़बान** के बीच के हिस्से से कड़वाहट और नमक वग़ैरा का ज़ाएक़ा मा'लूम होता है। पान, छालिया, गुटका, ख़ुश्बूदार सुपारी, मेनपूड़ी और तम्बाकू वग़ैरा का ब कसरत इस्ति'माल **ज़बान** के उन क़ुदरती ज़र्रात का ख़ातिमा कर देता है जिस के सबब खाने पीने का ज़ाएक़ा और ठन्डे गर्म का पता नहीं चलता। पान, छालिया, गुटका और तम्बाकू वग़ैरा के ज़ियादा इस्ति'माल से **ज़बान** के अगले दो तिहाई ($^2/_3$) हिस्से में **केन्सर** हो सकता है जो कि मज़ीद फैल कर गिज़ाई नाली को बन्द कर सकता है। **इस केन्सर का डॉक्टरी इलाज येही है कि ज़बान काट दी जाए। इस के बा'द न आदमी खाना खा सकता है न ही बात कर सकता है।**

मसूढ़ों का केन्सर

ब कसरत पान गुटका वग़ैरा खाने वाले के **मसूढ़े** उ़मूमन फूले रहते हैं और उन से अक्सर ख़ून रिस रिस कर पेट में जाता और त़रह़ त़रह़ की बीमारियां लाता है। अगर पान गुटके की अब भी मुसल्सल आ़दत जारी रहती है तो फिर आ़म त़ौर पर नीचे के फूले हुए **मसूढ़ों का केन्सर** हो जाता है।

दांतों का क़ब्ल अज़ वक़्त गिरना

क़ब्ल अज़ वक़्त **दांत** गिरने की कई वुजूहात हैं। एक तह़क़ीक़ी आ'दाद व शुमार में वक़्त से पहले ही जिन लोगों के **दांत** गिर गए थे उन में से 50 फ़ीसद अफ़राद **पान छालिया** के आ़दी थे। **पान छालिया** की वजह से जिस का कोई **दांत** गिर जाए और वोह फिर भी अपनी आ़दत से बाज़ न आए तो इस बात का 90 फ़ीसद ख़त़रा है कि उस के **मसूढ़ों में** مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **केन्सर हो जाए !**

पान गुटका और होंटों का केन्सर

होंटों का केन्सर उ़मूमन 30 ता 70 बरस की उ़म्र में होता था मगर अब पान छालिया और गुटका वग़ैरा का इस्ति'माल बढ़ जाने के सबब 10 ता 20 साल की उ़म्र में भी **होंटों का केन्सर** होने लगा है।

पान गुटका और मुंह के गोश्त का केन्सर

मुंह के गोश्त या'नी **गाल का केन्सर** उन लोगों को होता है जो पान या गुटका मुंह की एक त़रफ़ रखने के आ़दी होते हैं। गाल का केन्सर मर्दों की निस्बत **औ़रतों** में ज़ियादा होता है।

पान गुटका और मुंह का केन्सर

अगर अस्ली कथ्था लगा कर अच्छी क़िस्म की **छालिया** की तीन चार टुकड़ियों के साथ कभी कभार पान खा लिया जाए तो ह़रज नहीं, मगर मश्वरतन अ़र्ज़ है कि कभी कभार खाने से भी बचिये, कहीं चस्का लग गया तो मुश्किल खड़ी हो सकती है, क्यूं कि ब कसरत पान, गुटका और पान पराग वग़ैरा खाना बाइ़से तश्वीश है।

ह़िकायत : एक इस्लामी भाई जिन्हों ने पान खा खा कर होंट लाल किये हुए थे उन से मैं ने (या'नी सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ ने) मुंह खोलने को कहा तो ब मुश्किल थोड़ा सा खोल पाए, ज़बान बाहर निकालने की दर-ख़्वास्त की तो वोह भी सह़ीह़ त़रह़ से न निकाल सके। पूछा : मुंह में छाला हो गया है ? बोले : हां। मैं ने उन को पान बन्द कर देने का मश्वरा अ़र्ज़ किया। बा'द में पूछने पर मा'लूम हुवा कि اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मेरी दर-ख़्वास्त पर उन्हों ने जब पान की आ़दत निकाल दी तो उन के मुंह का छाला ठीक हो गया। हर **पान या गुटका** खाने वाला अपने मुंह का ज़रूर इम्तिह़ान करे, क्यूं कि इस का ज़ियादा इस्ति'माल मुंह के नर्म गोश्त को सख़्त कर देता है जिस के सबब मुंह पूरा खोलना और ज़बान को होंटों के बाहर निकालना दुश्वार हो जाता है। नीज़ **चूने** का मुसल्सल इस्ति'माल

मुंह की जिल्द को फाड़ कर **छाला** बना देता है और येही **मुंह का अल्सर** है। मुंह के अल्सर के मरीज़ों की ता'दाद में तेज़ी से इज़ाफ़ा होता जा रहा है। पान गुटका, ख़ुश्बूदार सोंफ़ सुपारी, छालिया, मेनपूड़ी, पान पराग, तम्बाकू वग़ैरा के सबब अब 100 में से 40 अफ़राद को **मुंह का अल्सर** होने लगा है । शुरूअ़ शुरूअ़ में जब मुंह में छाले पड़ते हैं तो हफ़्ते दो हफ़्ते में ठीक हो जाते हैं अगर एह़तियात़ न की जाए तो दोबारा पड़ते हैं और तक्लीफ़ की शिद्दत में इज़ाफ़ा होता है। ऐसे शख़्स को छालिया, गुटका, मेनपूड़ी और पान पराग वग़ैरा से फ़ौरन जान छुड़ा लेनी चाहिये वरना येही छाले आगे चल कर مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **केन्सर** की शक्ल इख़्तियार कर सकते हैं।

मुंह के केन्सर की अ़लामात

पान, छालिया, गुटका, ख़ुश्बूदार सोंफ़ सुपारी और रंग बिरंगी मीठी गोलियां[1], गीला गुटका, ख़ुश्क गुटका, पान पराग, नस्वार, ख़ुश्क नस्वार, हुक़्क़ा तम्बाकू, चुरट (या'नी सिगार। बड़ा सिगरेट जो तम्बाकू का पत्ता लपेट कर बनाया जाता है), मीठी छालिया वग़ैरा सब ख़त़रनाक चीज़ें हैं, इन की आ़दत तर्क कर देने ही में आ़फ़िय्यत है। वरना ख़ुदा ना ख़्वास्ता **मुंह का केन्सर** हो गया तो सर **पटख़ पटख़** कर रोने

1 : एक टॉफ़ियों के थोक के ब्योपारी के बक़ौल बे ज़रर नज़र आने वाली रंग बिरंगी मीठी मीठी गोलियों पर कपड़े रंगने का रंग चढ़ाया जाता है क्यूं कि खाने का रंग (Food colour) इस पर चढ़ता ही नहीं, नीज़ बाबुल मदीना के एक रंग के ब्योपारी ने मुझे बताया कि खाने का गुलाबी रंग बहुत महंगा होता है, लिहाज़ा खाने पीने की तमाम लाल या गुलाबी अश्या में हमारे यहां आ़म तौ़र पर कपड़े रंगने का रंग ही इस्ति'माल होता है जो कि केन्सर का बाइ़स बन सकता है। उस उम्मत के ख़ैर ख़्वाह ब्योपारी ने मज़ीद कहा कि اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं खाने पीने की अश्या बनाने वालों के हाथ गुलाबी रंग नहीं बेचता, आते हैं तो मन्अ़ कर देता हूं। सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ

से भी मस्अला ह़ल नहीं होगा । **मुंह के हर त़रह़ के केन्सर की अ़लामात** नोट फ़रमा लीजिये : पहले पहल ज़बान बाहर निकलना बन्द होती है, मुंह से बदबू आती है, मसूढ़ों से ख़ून रिसता है, बोलने और खाने पीने में तक्लीफ़ होती है और वक़्त से पहले दांत गिरना शुरूअ़ हो जाते हैं । **याद रखिये !** हर त़रह़ का **केन्सर** फैलता है । **मुंह का क़ेन्सर** फैल कर गले की त़रफ़ बढ़ता है और बिल आख़िर ग़िज़ा और सांस की नाली बन्द हो जाती है और फिर **मरीज़ मौत के घाट उतर जाता है ।**

पान गुटका और पेट का केन्सर

येह भी ग़ौर फ़रमाइये कि जो **चूना** मुंह के गोश्त को फाड़ सकता है वोह पेट के अन्दर जा कर न जाने क्या क्या तबाहियां मचाता होगा । चूना आंतों और मे'दे में भी बा'ज़ अवक़ात चरका (या'नी ख़राश, हलका सा ज़ख़्म) लगा देता है इसी को **अल्सर** कहते हैं । फ़ौरी त़ौर पर इस का पता नहीं चलता । जब येह बढ़ जाता है तब कहीं मा'लूम होता है । येही **अल्सर** आगे बढ़ कर **पेट के केन्सर** का भयानक रूप धार सकता है ।

केन्सर के 9 मरीज़

एक डॉक्टर का कहना है कि मैं ने सिविल (Civil) अस्पताल बाबुल मदीना कराची के E.N.T वॉर्ड का दौरा किया तो वहां **मुंह के केन्सर के 9 मरीज़** अपने ऑपरेशन की तारीख़ का इन्तिज़ार कर रहे थे। येह एक हफ़्ते के मरीज़ थे जो कि तक़रीबन सभी पान तम्बाकू, छालिया, गुटका, सिगरेट, मेनपूड़ी, पान पराग वग़ैरा के शाइक़ीन थे । उन की तफ़्सील येह है : ﴿1﴾ नादिर ख़ान, उ़म्र 17

बरस, **गले का केन्सर** ﴾2﴿ मुह़म्मद अ़ली, उ़म्र 16 साल, **सांस की नाली का केन्सर** ﴾3﴿ अस्ग़र, उ़म्र 19 साल, **मुंह का केन्सर** ﴾4﴿ राशिद, उ़म्र 33 साल, **मुंह का केन्सर** ﴾5﴿ नूर मुह़म्मद, उ़म्र 30 साल, **मुंह का केन्सर** ﴾6﴿ कामरान, उ़म्र 25 साल, **गले का केन्सर** ﴾7﴿ ह़ाजी मुह़म्मद, उ़म्र 52 साल, **ग़िज़ा की नाली का केन्सर** ﴾8﴿ तुराब अ़ली, उ़म्र 72 साल, **गले का केन्सर** ﴾9﴿ करीम बख़्श, उ़म्र 65 साल, **मुंह का केन्सर** । येह एक वॉर्ड के सिर्फ़ एक हफ़्ते के मरीज़ थे । सिविल अस्पताल बाबुल मदीना में E.N.T के दो वॉर्ड हैं, इस त़रह़ ग़ालिबन हफ़्ते भर के दुगने मरीज़ हुए । अब इसी ह़िसाब से माहाना और सालाना पान ख़ोर केन्सर के मरीज़ों का ह़िसाब लगा लीजिये । येह सिर्फ़ बाबुल मदीना के एक अस्पताल की बात है । ऐसे बल्कि इस से बड़े बड़े दुन्या में न जाने कितने अस्पताल हैं । इस त़रह़ **मुंह के केन्सर** के मरीज़ों की हफ़्तावार ता'दाद हज़ारों तक पहुंच सकती है !

मेनपूड़ी और गुटका पान खाना छोड़ दो भाइयो सिगरेट का धूआं उड़ाना छोड़ दो
केन्सर गर हो गया घबराओगे पछताओगे सर पटख़ कर रोओगे, पर कुछ न तुम कर पाओगे

पान या गुटका और गले का केन्सर

पान या गुटका ब कसरत खाने वाले की पहले पहल आवाज़ में ख़राबी पैदा होती है और गला बीमार हो जाता है, अगर वोह इस तक्लीफ़ को तम्बीह (NOTICE) तसव्वुर कर के पान या गुटका खाने से बाज़ नहीं आता तो बढ़ते बढ़ते مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **गले के केन्सर**

(Throat cancer) तक नौबत पहुंच जाती है। कहा जाता है : गले के केन्सर के मरीज़ों में से **60 ता 70** फ़ीसद ता'दाद **पान या गुटका** खाने वालों की होती है।

पान, गुटका और गुर्दे की पथरी व केन्सर

आज कल गुर्दे की पथरी की बीमारी आ़म है। इस का एक बहुत बड़ा सबब **छालिया** और **चूना** भी है। गुर्दे से निकली हुई पथरी की जब **तश्ख़ीश** (EXAMINE) की जाती है तो अक्सर उस में केल्शियम (या'नी चूने) की मिक़्दार ज़ियादा होती है। ह़त्ता कि बसा अवक़ात पथरी में **छालिया** के अज्ज़ा भी मौजूद होते हैं। जो लोग मज़े ले ले कर गुटका और त़रह़ त़रह़ की ख़ुश्बूदार सुपारी खाते हैं उन की ख़िदमत में अ़र्ज़ है : **एक डॉक्टर के बयान के मुत़ाबिक़ गुर्दे में 80 फ़ीसद पथरी छालिया के सबब होती है। مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ गुर्दा नाकारा (Fail) हो जाना या इस में केन्सर (Kidney cancer) हो जाना भी पान गुटके के कस्रते इस्ति'माल के नुक़्सानात में से है।**

ख़ूराक नाक से बाहर आ जाती है

दा'वते इस्लामी के आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना कराची के अन्दर **र-मज़ानुल मुबारक** 1426 सि.हि. में आख़िरी अ़-शरे के इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में **3000** से ज़ाइद इस्लामी भाई **मो'तकिफ़** थे। दौराने ए'तिकाफ़ नमाज़े ज़ोहर के बा'द "म-दनी मुज़ा-करे" में एक दिन सिगरेट और पान गुटके की तबाह कारियां

बयान की गई और कई आ़दी इस्लामी भाइयों ने उठ उठ कर पान गुटका और सिगरेट का इस्ति'माल तर्क करने का अ़ह्द किया, इसी दौरान किसी ने एक परची दी जिस में दा'वते इस्लामी के किसी ज़िम्मेदार ने लिखा था **: टन्डो आदम** (बाबुल इस्लाम सिन्ध, पाकिस्तान) में एक बार दा'वते इस्लामी के एक ''म-दनी मश्वरे'' के बा'द एक इस्लामी भाई ने बताया कि **मेरा भाई छालिया बहुत खाता था उस को गले का केन्सर हो गया है जो चीज़ मुंह से खाता है वोह नाक से निकल जाती है !**

गुटका ख़ोर की ह़िकायत

एक इस्लामी भाई ने बताया कि अ़ज़ीज़आबाद (बाबुल मदीना कराची, पाकिस्तान) के 28 सालह इस्लामी भाई से मुलाक़ात हुई। उन्हों ने नाक के नीचे से अपना मुंह छुपाया हुवा था, वजह पूछने पर कपड़ा हटा दिया। **बदबू का एक ज़ोरदार भब्का उठा, आह ! बेचारे के चेहरे के निचले ह़िस्से का गोश्त केन्सर की वजह से सड़ कर झड़ चुका था और दांत नज़र आ रहे थे।** ब मुश्किल तमाम उन्हों ने बताया कि मैं गुटका खाने का आ़दी था यहां तक कि गुटका मुंह में रख कर सो भी जाता था। कुछ ही दिनों के बा'द या'नी 15 **शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म** 1425 सि.हि. को उन का इन्तिक़ाल हो गया। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारी, मर्ह़ूम इस्लामी भाई की और उम्मते मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मग़्फ़िरत फ़रमाए। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

एक डॉक्टर के तअस्सुरात

एक डॉक्टर का बयान है, मैं ने **सिविल** अस्पताल (बाबुल

मदीना कराची, पाकिस्तान) की चार सालह सर्विस में **मुंह के केन्सर** में अक्सर नौ जवानों ही को मुब्तला देखा है। **इस की वजह सिगरेट, पान, छालिया, तम्बाकू और मेनपूड़ी का बे तहाशा इस्ति'माल है।** येह चीज़ें न जाने कितनों को केन्सर के मरज़ में पटख़ देती हैं। बा'ज़ लोगों का येह कहना मुनासिब नहीं कि "फ़ुलां एक अ़र्से से पान खा रहा है उस को तो कुछ नहीं होता !" हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से आ़फ़िय्यत का सुवाल करते हैं, आज नहीं भी हुवा तो कल "कुछ" हो सकता है। नफ़्सानी ख़्वाहिश और चन्द मिनट के लुत्फ़ की ख़ातिर अपनी क़ीमती जान को ख़त़रे में डालना दानिश मन्दी नहीं, बहर ह़ाल इन चीज़ों के कस्रते इस्ति'माल में जानी व माली हर त़रह़ से नुक़्सान है। एक **छोटा सा पान** बाबुल मदीना कराची में (ता दमे तह़रीर या'नी 30 **रबीउ़ल ग़ौस** 1426 सि.हि.) 2 रुपै 50 पैसे का मिलता है अगर रोज़ाना कोई 10 पान खाए तो यौमिय्या 25 रुपै हुए और इस त़रह़ वोह म-दनी बरस के ह़िसाब से सालाना 9125 रुपै के पान खा कर थू थू करता, पिचकारियां मारता और बजाए फ़ाएदे के इतनी भारी रक़म में त़रह़ त़रह़ के अमराज़ ख़रीद रहा है। नीज़ अगर कोई बीमारी लग गई तो इ़लाज पर हज़ारहा रुपै का ख़र्च मज़ीद बरआं और पिचकारी मार कर किसी की दीवार को रंगीन कर दिया तो उस की दिल आज़ारी व ह़क़ त-लफ़्ी के गुनाहे कबीरा का इम्कान जुदा।

कीचड़ आलूद दीवार की ह़िकायत

जो लोग दूसरों की दीवारों पर पान की पीक थूकते, बिग़ैर इजाज़ते

मालिके मकान चोंकिंग करते, पोस्टर लगाते और जान बूझ कर किसी त़रह़ से उस के रंग व चूने वग़ैरा को नुक़्सान पहुंचने का बाइ़स हो कर सख़्त गुनहगार और जहन्नम के ह़क़दार बनते हैं उन की तवज्जोह के लिये एक ईमान अफ़्रोज़ ह़िकायत पेश की जाती है, चुनान्चे करोड़ों ह़-नफ़िय्यों के अ़ज़ीम पेशवा ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم अपने एक मक़्रूज़ मजूसी से क़र्ज़ की वुसूली के लिये तशरीफ़ ले गए, घर के क़रीब इत्तिफ़ाक़ से आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ना'ले शरीफ़ कीचड़ में सन गई उस को साफ़ करने के लिये आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने झाड़ा तो कुछ गन्दगी उड़ कर मजूसी की दीवार से लग गई । आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस उल्झन में पड़ गए कि अगर साफ़ नहीं करूंगा तो दीवार गन्दी रहेगी, गन्दगी खुरचूंगा तो मिट्टी वग़ैरा झड़ेगी और यूं दीवार को नुक़्सान पहुंचेगा । इसी शशोपन्ज में आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मकान का दरवाज़ा खट-खटाया, जब मजूसी ने बाहर निकल कर इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم को देखा तो सट-पटा गया कि हो न हो आप अपना क़र्ज़ा त़लब फ़रमाएंगे । लिहाज़ा मा'ज़िरत चाहने लगा । आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने दीवार का क़िस्सा बता कर तश्वीश का इज़्हार करते हुए फ़रमाया कि अब आप ही तदबीर बताइये ताकि येह दीवार साफ़ हो जाए । उस मजूसी ने जब इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم का येह तक़्वा और हुस्ने अख़्लाक़ देखा तो बोल उठा : दीवार की गन्दगी रहने दीजिये पहले मुझे दाख़िले इस्लाम कर के मेरे दिल की गन्दगी साफ़ कर दीजिये । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह मजूसी **मुशर्रफ़** ब इस्लाम हो गया ।

(تفسیر کبیر ج ۱ ص ۲۰٤)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! करोड़ों मुसल्मानों के चहीते इमाम या'नी हमारे इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم किस क़दर ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के ह़ामिल थे । यक़ीनन तक़्वा और परहेज़ गारी का अपना एक असर होता है, इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم की म-दनी सोच देख कर اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आतश परस्त शख़्स मुसल्मान हो गया ।

सिन्ध में गुटके की तबाह कारियां

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बाबुल इस्लाम (सिन्ध, पाकिस्तान) बिल ख़ुसूस ह़ैदरआबाद में नाक़िस **मेनपूड़ी** और सड़ी हुई छालिया के गुटके ने तबाही मचा रखी है। इन्टरनेट की वेबसाइट ''जंग ऑन लाइन'' 13 **स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र** 1426 सि.हि. (ब मुत़ाबिक़ 23-3-2005) की एक त़वील ख़बर को मुख़्तसर कर के पेश करता हूं पढ़िये और लरज़िये नीज़ बाज़ारी पान, छालिया, गुटका और मेनपूड़ी के इस्ति'माल की ख़ुद पर और हो सके तो अपने बाल बच्चों पर भी सख़्त पाबन्दी डालिये :

''ह़ैदरआबाद और इस के क़ुर्बो जवार में मुज़िर्रे सिह़्ह़त **मेनपूड़ी** और **गुटके** के इस्ति'माल के बाइस 20 अफ़राद को इन्तिहाई नाज़ुक ह़ालत में मुख़्तलिफ़ अस्पतालों में दाख़िल किया गया है जब कि तक़रीबन 500 अफ़राद **ब्लड केन्सर** और गले की बीमारियों में मुब्तला हो गए हैं। वाज़ेह़ हो कि ''सिन्ध हाईकोर्ट सर्किट बेन्च ह़ैदरआबाद'' की जानिब से **मेनपूड़ी** और **गुटके** की तय्यारी और फ़रोख़्त पर पाबन्दी है। लेकिन ह़ैदरआबाद सिटी, लत़ीफ़आबाद, क़ासिमआबाद और अन्दरूने सिन्ध मुज़िर्रे सिह़्ह़त मेनपूड़ी और गुटके की तय्यारी और खुले आ़म फ़रोख़्त जारी है। बा'ज़ नुमूने टेस्ट के लिये ''पाकिस्तान कोन्सिल ऑफ़ साईन्टिफ़िक एन्ड इन्डस्ट्रीयल रीसर्च लेबोरेटरीज़'' को रवाना किये गए थे जिस ने

9-9-2004 को अपनी रिपोर्ट में **गुटके** और **मेनपूड़ी** के नुमूनों को मुज़िर्रे सिह्हत क़रार दिया था। हैदरआबाद की ''शहरी बचाव एक्शन कमेटी सिन्ध'' ने एक सर्वे रिपोर्ट जारी की है जिस में बताया गया है कि मेनपूड़ी की तय्यारी में 70 फ़ीसद खजूर की गुठलियां और 30 फ़ीसद ग़ैर मे'यारी छालिया इस्ति'माल की जा रही हैं। **मेनपूड़ी** और **गुटके** में गली सड़ी छालिया, मुलतानी मिट्टी, ग़ैर मे'यारी तम्बाकू, चूना और रंग (Paint) में इस्ति'माल होने वाले पहाड़ी पथ्थर का सुफूफ़ (पावडर) इस्ति'माल किया जा रहा है जिस के बाइस लोगों में **केन्सर** और दीगर मोहलिक अमराज़ तेज़ी से फैल रहे हैं।'' हैदरआबाद (बाबुल इस्लाम पाकिस्तान) के ''मेनपूड़ी'' खाने वालों के लरज़ा ख़ेज़ वाक़िआत मुला-हज़ा हों। चुनान्चे

मेनपूड़ी के पांच शिकार

हैदरआबाद (बाबुल इस्लाम पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है : ग़ालिबन 1421 हि. की बात है, मैं हैदरआबाद से बाबुल मदीना (कराची) जाने के लिये कमो बेश दो पहर 2 बजे बस में सुवार हुवा, बराबर की निशस्त पर बैठे हुए एक इस्लामी भाई से बातचीत शुरूअ़ हुई। दौराने गुफ़्त-गू उन्हों ने जो कुछ बताया वोह अपनी याद दाश्त के मुताबिक़ अ़र्ज़ करता हूं : ''मैं **मेनपूड़ी** खाने का इन्तिहाई शौक़ीन था, मगर अब मैं ने इस से जान छुड़ा ली है इस की वजह येह है कि मेरे तक़रीबन तमाम दोस्त **मेनपूड़ी** खाने के आ़दी थे। **उन में से 5 केन्सर का शिकार हो गए।** जिन में से तीन अब तक फ़ौत हो चुके हैं और जो 2 ज़िन्दा हैं उन्हें डॉक्टरों ने जवाब दे दिया है। आप दुआ़ फ़रमाएं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें शिफ़ा अ़ता फ़रमाए।''

गाल का केन्सर

फुलैली (हैदरआबाद, बाबुल इस्लाम पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई के बयान का खुलासा है : ग़ालिबन 1992 सि.ई. की बात है कि हमारे एक जवां साल अ़ज़ीज़ **मेनपूड़ी** खाने के इस क़दर आ़दी थे कि **मेनपूड़ी** मुंह में रख कर सो भी जाते थे इब्तिदाअन उन के उलटे **गाल** की त़रफ़ **छाला** पड़ा जो बढ़ते बढ़ते **केन्सर** की सूरत इख़्तियार कर गया । इ़लाज करवाया मगर मरज़ बढ़ता रहा और चन्द ही माह में रुख़्सार (या'नी गाल) के आरपार सूराख़ हो गया और आहिस्ता आहिस्ता गाल का गोश्त गल कर इस त़रह़ झड़ने लगा जैसे जला हुवा काग़ज़ झड़ता है कुछ ही अ़र्से में **गाल** का तक़रीबन हि़स्सा गल कर झड़ गया । जिस की वजह से पूरा जबड़ा नज़र आता और जो भी चीज़ खाने या पीने की कोशिश करते वोह बाहर निकल आती, वोह अपने मुंह पर कपड़ा डाले रहते, बदबू के बाइ़स ख़ुश्बू वग़ैरा लगाते । ह़ालत जब बहुत बिगड़ी तो उन्हें इ़लाज के लिये जैसे तैसे मर्कज़ुल औलिया लाहोर ले जाया गया मगर डॉक्टरों ने येह कह कर लौटा दिया कि अब इन का बचना बहुत मुश्किल है, शायद येह चन्द दिनों के मेहमान हैं । जब वापसी के लिये बस में बैठे तो दीगर मुसाफ़िरों ने बदबू के भपकों और मरज़ की नौइ़यत देख कर एह़तिजाज शुरूअ़ कर दिया कि हम ऐसे मरीज़ के साथ सफ़र नहीं कर सकते । बिल आख़िर उन्हें ब ज़रीअ़ए ट्रेन रास्ते में ख़ुश्बू का स्प्रे करते हुए लाया गया । घर आने के बा'द कुछ ही दिनों में उन का इन्तिक़ाल हो गया । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारी, मर्हूम इस्लामी भाई की और उम्मते मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मग़्फ़िरत फ़रमाए ।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मेनपूड़ी खाने वाले की ह़िकायत

पान के साथ तम्बाकू का इस्ति'माल नुक़्सानात में मज़ीद इज़ाफ़ा करता है, इसी त़रह़ **ख़ुश्बूदार सोंफ़ सुपारी** भी मुज़िर्रे सिह़्ह़त है और **मेनपूड़ी** तो इस क़दर ख़त़रनाक है कि इस की त़रफ़ देखना भी नहीं चाहिये। एक इस्लामी भाई ने बताया कि मैं ने लियाक़तआबाद (बाबुल मदीना पाकिस्तान) के एक नौ जवान को देखा है जो **मेनपूड़ी** खाने का आ़दी था। बेचारे को **गले का केन्सर** हो गया है, ग़िज़ा उतरनी बन्द हो गई थी तो डॉक्टरों ने गले की त़रफ़ सूराख़ कर के ग़िज़ा पहुंचाने के लिये नाली लगा दी है।

पान का ने'मल बदल

पान वग़ैरा का **ने'मल बदल** (Alternative) यूं कर लीजिये कि अगर गारन्टी शुदा अस्ली कत्था मिल जाए फ़बिहा (या'नी बेहतर) वरना सुलैमानी पान या'नी बिग़ैर कत्थे चूने के, पान के सब्ज़ पत्ते पर बे ख़ुश्बू फ़क़त़ सादा छालिया के तीन टुकड़े रख कर खा लीजिये। मगर येह भी कभी कभार खाइये इस की आ़दत मत बनाइये इक्का दुक्का बाज़ारी पान खाने में येह भी ख़त़रा रहता है कि अगर चस्का लग गया तो बार बार खाने को जी चाहेगा और यूं आ़दत पड़ सकती है, लिहाज़ा इस की जगह बिग़ैर ख़ुश्बू लगी इलायची या बिग़ैर ख़ुश्बू का सोंफ़ धनिया भी इस्ति'माल किया जा सकता है। छोटी छोटी मीठी गोलियां हरगिज़ न खाएं कि मेरी नाक़िस मा'लूमात के मुत़ाबिक़ इस पर खाने का रंग (Food colour) नहीं चढ़ता इस लिये कपड़े रंगने का रंग चढ़ाते हैं। ज़ियादा पान खाने वाले के होंट और दांत वग़ैरा गहरे लाल और बदनुमा हो जाते हैं।

पान का उख़्वी नुक़्सान

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर सवाब दिलाने वाली अच्छी अच्छी निय्यतें न हों तो बाज़ारी पान खाने में आख़िरत के मुआ़-मले में भी नुक़्सान ही नज़र आ रहा है कि **ज़िन्दगी के अनमोल लम्ह़ात** पान छालिया चबाने की नज़्र हो जाते हैं, इस दौरान इन्सान ज़िक्रो दुरूद से दूर और तिलावत से मा'ज़ूर रहता है। बार बार पीक थूक कर दूसरों के लिये घिन का बाइस बनता है, किसी के कपड़े, गाड़ी या दीवार वग़ैरा पर पीक डाल दी तो बन्दों की ह़क़ त-लफ़ी के मुआ़-मलात का सामना होता है। और वुज़ू के मुआ़-मले में भी पान खाने वाले के लिये सख़्त आज़माइश का सामना है। चुनान्चे

पान खाने वाले मु-तवज्जेह हों

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिद्अ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइसे ख़ैरो ब-र-कत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द अव्वल **सफ़ह़ा** 624 ता 625 पर फ़रमाते हैं : पानों के कसरत से आ़दी ख़ुसूसन जब कि दांतों में फ़ज़ा (गेप) हो तजरिबे से जानते हैं छालिया के बारीक रेज़े और पान के बहुत छोटे छोटे टुकड़े इस त़रह़ मुंह के अत़राफ़ो अक्नाफ़ में जा गीर होते हैं (या'नी मुंह के कोनों और दांतों के खांचों में घुस जाते हैं) कि तीन बल्कि कभी दस बारह कुल्लियां भी उन के तस्फ़ियए ताम (या'नी मुकम्मल सफ़ाई) को काफ़ी नहीं होतीं, न ख़िलाल उन्हें निकाल सकता है न मिस्वाक, सिवा कुल्लियों के कि पानी मनाफ़िज़ (या'नी

सूराख़ों) में दाख़िल होता और जुम्बिशें देने (या'नी हिलाने) से जमे हुए बारीक ज़र्रों को ब तदरीज छुड़ा छुड़ा कर लाता है, इस की भी कोई तह़दीद (ह़द बन्दी) नहीं हो सकती और येह कामिल तस्फ़िया (या'नी मुकम्मल सफ़ाई) भी बहुत **मुअक्कद** (या'नी इस की सख़्त ताकीद) है **मु-तअ़द्दद** अह़ादीस में इर्शाद हुवा है कि जब बन्दा नमाज़ को खड़ा होता है फ़िरिश्ता उस के मुंह पर अपना मुंह रखता है येह जो पढ़ता है इस के मुंह से निकल कर फ़िरिश्ते के मुंह में जाता है उस वक़्त अगर खाने की कोई शै उस के दांतों में होती है मलाएका को उस से ऐसी सख़्त ईज़ा होती है कि और शै से नहीं होती । (चुनान्चे)

फ़िरिश्तों को ईज़ा होती है

ह़ुज़ूरे अकरम, **नूरे मुजस्सम**, शाहे बनी आदम, **रसूले मुह़तशम** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब तुम में से कोई रात को नमाज़ के लिये खड़ा हो तो चाहिये कि मिस्वाक कर ले क्यूं कि जब वोह अपनी नमाज़ में क़िराअत करता है तो फ़िरिश्ता अपना मुंह इस के मुंह पर रख लेता है और जो चीज़ इस के मुंह से निकलती है वोह फ़िरिश्ते के मुंह में दाख़िल हो जाती है । (شُعَبُ الْاِيمان ج ٢ ص ٣٨١ رقم ٢١١٧) और **त़-बरानी** ने **कबीर** में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी से रिवायत की है कि दोनों फ़िरिश्तों पर इस से ज़ियादा कोई चीज़ गिरां (या'नी तक्लीफ़ देह) नहीं कि वोह अपने साथी को नमाज़ पढ़ता **देखें** और उस के दांतों में खाने के रेज़े फंसे हों ।

(اَلْمُعْجَمُ الْكَبِير لِلطَّبَرانى ج ٤ ص ١٧٧ حديث ٤٠٦١)

इफ़्त़ार में एह़तियात़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बिल ख़ुसूस **र-मज़ानुल मुबारक** में इस बात का ज़ियादा ख़याल रखना चाहिये । मस्जिद में एकआध खजूर से इफ़्त़ार कर के मुंह में इस त़रह़ हिला जुला कर पानी पिये कि मुंह में

मिठास और कोई ज़र्रा बाक़ी न रहे अगर फल या पकोड़े समोसे वग़ैरा भी खाए तो मुंह और दांत अच्छी त़रह़ साफ़ करने होंगे दौराने नमाज़ कोई ज़र्रा या रेशा दांतों में फंसा हुवा नहीं रहना चाहिये । अगर मुंह साफ़ करना दुश्वार हो या नमाज़े मग़रिब की जमाअ़त की कोई रक्अ़त फ़ौत होती हो तो आसानी इसी में है कि सिर्फ़ पानी से इफ़्त़ार कर ले कि पानी से इफ़्त़ार करना भी सुन्नत है । चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के **महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को कभी इस त़रह़ नहीं देखा कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इफ़्त़ार से पहले नमाज़े मग़रिब अदा फ़रमाई हो, चाहे एक घूंट पानी ही होता । (आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस पानी से इफ़्त़ार फ़रमाते) (مُسْنَدُ اَبِی یَعْلٰی ج۳ص۳۲٤حدیث۳۷۸۰)

तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, हर माह कम अज़् कम तीन दिन के लिये **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र करते रहिये और "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए रोज़ाना **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह की इब्तिदाई दस तारीख़ों के अन्दर अन्दर अपने ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाते रहिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इन ज़राएअ़ से बे शुमार सुन्नतें सीखने का मौक़अ़ मिलता रहेगा ।

या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ ! जो मुसल्मान पान, गुटका, ख़ुश्बूदार छालिया, मेनपूड़ी, पान पराग, तम्बाकू और सिगरेट वग़ैरा की आ़दतों से जान छुड़ाना चाहते हैं उन के लिये आसानियां अ़त़ा फ़रमा और उन्हें इन चीज़ों से नजात बख़्श, हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा । उम्मते मह़बूब को बख़्श दे । اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहक़ीक वोह बद बख़्त हो गया । (ابن سنی)

नोट : येह रिसाला पहली बार 11 **शव्वालुल मुकर्रम** 1427 सि.हि. (ब मुताबिक़ 4-11-2006) को तरतीब पाया और कई बार शाएअ् किया गया फिर 15 **मुहर्रमुल हराम** 1433 सि.हि. (ब मुताबिक़ 11-12-2011) में इस पर नज़रे सानी की ।

तालिबे ग़मे मदीना व
बक़ीअ् व मग़्फ़िरत व
बे हिसाब जन्नतुल
फ़िरदौस में आक़ा
का पड़ोस

11 शव्वालुल मुकर्रम 1433 हि.
4-11-2006

येह रिसाला पढ़कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में **मक-त-बतुल मदीना** के शाएअ् कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोहफ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए् अपने महल्ले के घर घर में माहाना कम अज़् कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या म-दनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये ।

مآخذ ومراجع

کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ
تفسیر کبیر	داراحیاء التراث العربی بیروت	شعب الایمان	دارالکتب العلمیۃ بیروت
صحیح بخاری	دارالکتب العلمیۃ بیروت	السنن الکبری	دارالکتب العلمیۃ بیروت
صحیح مسلم	دارابن حزم بیروت	مسند ابویعلی	دارالکتب العلمیۃ بیروت
سنن ترمذی	دارالفکر بیروت	ردالمحتار	دارالمعرفۃ بیروت
سنن نسائی	دارالکتب العلمیۃ بیروت	فتاوی رضویہ	رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور
معجم کبیر	داراحیاء التراث العربی بیروت	بہارِ شریعت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे कियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी । (مجمع الزوائد)

फ़ेहरिस

मज़मून	सफ़्हा	मज़मून	सफ़्हा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	पान गुटका और मुंह के गोश्त का केन्सर	10
मुसल्मान की भलाई चाहना कारे सवाब	1	पान गुटका और मुंह का केन्सर	11
मसूढ़ों के केन्सर के मरीज़ की हिकायत	2	मुंह के केन्सर की अ़लामात	12
आक़ा ने परहेज़ी इर्शाद फ़रमाई	2	पान गुटका और पेट का केन्सर	13
डॉक्टर के मन्अ़ करने का इन्तिज़ार मत कीजिये	3	केन्सर के 9 मरीज़	13
पान क्या है ?	4	पान या गुटका और गले का केन्सर	14
पान के 15 फ़वाइद	4	पान, गुटका और गुर्दे की पथरी व केन्सर	15
कत्था क्या है ?	5	ख़ूराक नाक से बाहर आ जाती है	15
कत्थे के 8 फ़वाइद	5	गुटका ख़ोर की हिकायत	16
सूखी खांसी का इलाज	6	एक डॉक्टर के तअस्सुरात	16
मुफ़ीद मन्जन	6	कीचड़ आलूद दीवार की हिकायत	17
नक़्ली कत्थे की तबाह कारियां	6	सिन्ध में गुटके की तबाह कारियां	19
मिट्टी खाना गोया खुदकुशी है	7	मेनपूड़ी के पांच शिकार	20
चूना क्या है ?	7	गाल का केन्सर	21
चूने के फ़वाइद	7	मेनपूड़ी खाने वाले की हिकायत	22
चूना खाने का शर-ई हुक्म	8	पान का ने'मल बदल	22
चूने के नुक़्सानात	8	पान का उख़्वी नुक़्सान	23
छालिया	9	पान खाने वाले मु-तवज्जेह हों	23
छालिया का मन्जन	9	फ़िरिश्तों को ईज़ा होती है	24
ज़बान का केन्सर	9	इफ़्तार में एहतियात	24
मसूढ़ों का केन्सर	10	मआख़िज़ो मराजेअ़	26
दांतों का क़ब्ल अज़ वक़्त गिरना	10	फ़ेहरिस	27
पान गुटका और होंटों का केन्सर	10	★★★★★	

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती है, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आशिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **म-दनी इन्आमात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की हिफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह की कोशिश के लिये "**म-दनी इन्आमात**" पर अमल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये "**म-दनी क़ाफ़िलों**" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मक-त-बतुल मदीना की शाखें

मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429
देहली : 421, मटिया महल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560
नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621
अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385
हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786
हुब्ली : A.J. मुद्दोल कोम्प्लेक्स, A.J. मुद्दोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक. फ़ोन : 08363244860

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी

फ़ैज़ाने मदीना, ग्री कोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net